कृष्ण चंद्र चौधरी

कृष्ण चंद्र चौधरी के जनम 11 जनवरी 1954 के वजीरगंज, गया में भेल। इनकर हिन्दी कविता संगरह **'मासूम चेहरे की हँसी'** परकाशित हे। ई समकालीन कविता के चर्चित हस्ताक्षर हथ। ई बेहतरीन गीत अउ गजल भी लिखऽहथ।

कृष्ण चंद चौधरी 'मत जा छोड़के गाँव चिरइयाँ' कविता में मध्य बिहार में व्याप्त भय आउ आतंक के बातावरन के चित्र खींचलन हे। नक्सलवादी आंदोलन के चलते भूपति आउ भूमिहीन के बीच मार-काट मचल हे। गाँव से सांति आउ स्नेह अलोप हो चुकल हे। एगो अनजान भय व्याप्त हे, कखनी कउन कहाँ मारल जायत। कब केकर गाँव इया टोला पर गोहार हमला बोल देवत। लोग गाँव में रहना न चाह रहल हे। कवि चिरँई के माध्यम से जनता के गाँव छोड़के न जाए के सलाह दे रहल हे।

मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ

अइसन मचल हे हाहाकार
गांव में कि अप्पन परछाई देख
डरे लगल हे अदमी

केकरो पर विस्वास न रह गेल,
सब के सब भय के चादर ओढ़ले
मनावइत हे जिनगी के खैर
न हे आँख में ममता के लोर
आउ न उठऽ हे हिंरदा में प्यार के हिलोर

तइयो पोखर पर पहरुआ नियन
खड़ा हे बूढ़ा पीपर,

अभी बचल हे उनखर छाँव,
ठहर जा एही ठाँव चिरैयाँ !
मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ!!

फन उठौले साँप नियन लगऽ हे रात,
भला अइसन में केकर आँख में उतरे नींन,
दुआरी दन्ने टकटक्की लगइले
बइठल रहऽ हे अदमी,
पता न कन्ने से आ जाय पगलायल भीड़
आउ घर के घर रौंदते गुजर जाय
आतंक भरल महौल में

कउन गयतो गीत–
का सुनयतो कजरी-झूमर,
कम से कम बचल रहे जिनगी के राज,
तू ही गावऽ गीत प्रीत के,
मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ!

जात-पात के ईंधन से
धधकल आग में
कब तक झुलसइत रहत अदमी,
अब तो नेह के बरखा से ही
एकरा बुतावे के जरूरत हे।

खोंता में बइठल सुते से
कुछ काम न बनतो,
आगे आवऽ, हम भी हियो तोहर साथ,
न थकल रहऽ हे हम्मर पाँव,
भाग के तू कन्ने जयबऽ

ठहर जा एही ठाँव चिरैयाँ !
मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ !!

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कविता में चिरैयाँ केकरा कहल गेल हे ?
   (ख) अदमी अप्पन परछाई देख के काहे डरे लगल हे ?
   (ग) 'बूढ़ा पीपर' के माध्यम से कवि का कहेला चाह रहल हे ?
   (घ) कवि कउन चीज के बुतावे ला कह रहल हे ?
   (ङ) कवि के पाँव थकल न हे, समझावऽ।

लिखित :

1. कवि कृष्ण चंद्र चौधरी के परिचय दऽ (पाँच वाक्य में) ।
2. कविता में आज के माहौल कइसन हे, बतावऽ ।
3. आज के समय में पुरनका समय के कउन-कउन चीज भुला गेल हे ?
4. गीत के प्रीत गावेला का का करे पड़त ?
5. नीचे लिखल पंक्ति के संदर्भ सहित भाव लिखऽ :—

   (क) फन उठौले साँप नियन लगऽ हे रात/
   भला अइसन में केकर आँख में उतरे नींन /
   दुआरी दन्ने टकटकी लगइले /
   बइठल रहऽ हे अदमी ।

   (ख) तू ही गावऽ गीत प्रीत के /
   मत जा छोड़ के गाँव चिरैयाँ /
   जात-पात के ईंधन से
   धधकल आग में /
   कबतक झुलसइत रहत अदमी ?

भासा-अध्ययन :

1. कविता के भासा कइसन हे समझावऽ (पाँच वाक्य में) ।
2. कविता से तोरा का संदेस मिलऽ हे ?
3. समाज में समरसता कइसे लावल जा सकऽ हे ? एकरा बारे में पाँच वाक्य लिखऽ ।
4. कविता में कउन रस हे ? ओकरा पर एगो पोस्टर बनावऽ ।
5. कविता से मुहाबरा चुनके अरथ लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. (क) आतक भरल माहौल कइसन होवऽ हे, अप्पन समझ से बतावऽ।
   (ख) 'पगलायल भीड़' के तू कइसे सही रहता पर ला सकऽ हऽ ?
   (ग) धधकल आग का हे ? ओकरा कइसे बुतावल जा सकऽ हे ?
   (घ) खोंता में न बइठके तू का करबऽ ?
   (ङ) गाँव के वर्तमान माहौल पर विद्यालय में एगो विचार-गोस्ठी करऽ ?

सब्दार्थ :

खैर	—	ठीक-ठाक
हिलोर	—	हलफा
पहरुआ	—	पहरेदार
छाँव	—	छाँह
आतंक	—	उत्पात
ईंधन	—	जरना